बर्फ़ के टुकड़े

डॉ. प्रेम सिंह

बर्फ के टुकड़े

डॉ. (श्रीमती) प्रेम सिंह

अनुक्रम

दो शब्द	6
सागर में	14
लंबी-लंबी कहानियाँ	15
बंधन तुमने जो लगाया होता	16
मेरा नाच देखते हो	17
मैंने	18
मैंने उसे	19
मैं तैरना तो नहीं जानती	20
तस्वीर पर से काले धब्बे	21
इंच भर धरती नहीं चाहिए	22
लाल बत्ती दिखाकर मुझे	23
तुम्हारे ड्राइंग रूम में	24
मैं कविता नहीं सुनाऊँगी	25
मेरी पत्नी मुझे घर से बाहर	26
मेरे बच्चे!	27
कूक कोयल की	29
दु:ख	30
मेरे और उसके बीच	31
एक उदास राह पर	32

मैं सौ मीटर की रेस लगाता था 33
उसने किस्तों में रेफ्रीजरेटर ख़रीदा है 34
सफेद कमीज पर दाग़ है 35
कंकरीट पर बैठा वह हँस रहा है 36
बीती है 37
मैले कपड़े 38
आस्था के आयाम 39
परिचय की मीठी मुस्कान गाढ़ी होने से पहले 40
मरा हुआ मन 41
चलो बाज़ार चलें 42
उसके काले चश्में 43
जब भी मारा जाता है अभिमन्यु 44
मानव-जाति का उद्धार करने 45
तुझे कैसे समझाऊँ 46
आकाशवाणी हुई 47
उसने मुझे पूजा है 48
आज मैंने चुरा लिया है सूरज 50
सुख का द्वार खोलूँ कैसे 51
मैं तो सोई थी 52
शोर बहुत है 53
तुम जहाँ हो 54
न जाने तुममें 55

भरे बाजार में 56

रात सभी बिता लेते हैं 57

बार-बार 58

मेरा हाथ जब भी पड़ा 60

मन के किसी कोने में 61

जमीन पर पड़े 62

दरवाजे पर पड़ी 63

खेल-खेल में दुनिया बदल गयी 64

मैं चौराहे पर खड़ी रही 65

मैं गूँगी हूँ 66

पट्टियों से घाव ढँका नहीं गया 67

कैसी विडम्बना है 68

मेरे साथियों! 69

निश्चयों के पहाड़ चूर-चूर हो जाते हैं 70

मेरे सिर पर वह कील गाड़ रहा था 71

उसे हर पल मार पड़ी थी 72

मैंने क्या किया! 73

मैं चुप रहूँ 74

भीगे तकिये पर 76

वह विरासत शून्य कर दिया गया था 77

जाओ जाकर देखो 78

किसलिए रास्ते 79

दु:ख है ही नहीं 80
देखा है तमाशा अपना 81
अब तो खुशियाँ उधार मिलती हैं 82
पत्थर चोट नहीं करता 83
तुम मुझे प्यार करो! 84
मैंने दु:खों में सुख ढूँढा 85
हम हैं! 86
उठने को न कहो 87
ओ जमाने! मुझसे तू-तू, मैं-मैं न कर 88
टूटते खण्डहरों में 89
एक दुर्गन्ध मेरी नाक में घुसी 90
दोनों चौराहों पर तम्बू थे 91
उसने बचपन में चोरी की थी 92
तकिये के नीचे 93
तेरी याद 94
अलमारी में बंद 95
अँधेरे में जो किताब पढ़ी जाती है 96
शोभा, प्रभा, आभा हो 97
मैंने तुमसे अपनी बात कही थी 98
कहीं तन दूर है 100
मेरी परछाईं को 101
तुम्हारी आँखें बोलती हैं 103

मेरे पास जो होना चाहिए था 104
जी में आता है 105
पी गये सारा दु:ख 107
उसने तो बहुत कुछ देना चाहा 108
तन की जगी भूख 109
सुख सहेजा ही न होता 110
हम भूल करते हैं 111
कड़ी धूप में 112
बाजार में खुशियों की सेल लगी थी 113
चाँद कलंकित है 114
मेरे पाँव के छाले 115
मैं एक प्रवाह में 116
मैं अपने बिस्तर पर सो रही हूँ 117
क्या कहते हो? 118
कमरे-कमरे हरियाली 119
दीवार पर टँगी तस्वीर 120